देवी देवताएं सनातन संस्कृति के वाहक : राजयोगिनी दादी रत्न मोहिनी

आबू पर्वत, ज्ञानसरोवर, 16 मई। आज ज्ञानसरोवर के हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं इसकी भगिनी संस्था आर ई आर एफ के तत्वावधान में इसके धार्मिक सेवा प्रभाग ने एक अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया। दीप प्रज्वलित करके इस सम्मेलन का उद्घाटन संपन्न हुआ। सनातन संस्कृति की पनुर्स्थापना नामक विषय वस्तु को प्रकाशित करने का लक्ष्य रखकर इस सम्मेलन का आयोजन किया गया।

संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रत्न मोहिनी जी ने अपना आर्शीवचन इन शब्दों में दिया। आपने कहा कि इस सम्मेलन में शिरकत करने के पीछे हम सभी आत्माओं का लक्ष्य है सनातन संस्कृति की पुनर्स्थापना करने का प्रयत्न करना। इसके लिये पहले यह जानना जरूरी है कि हम जानें कि हमारी सनातन संस्कृति है क्या? दादी जी ने बताया कि आज से 5000 वर्ष पहले हमारे यहॉ सनातन संस्कृति थी जब कि विश्व में देव युग या स्वर्ण युग था। उस समय सभी देवी देवताओं को अपने आत्मिक स्वरूप का भान था और वे सभी अत्यंत श्रेष्ठ पावन जीवन व्यतीत किया करते थे। उस संस्कृति की पुनर्स्थापना के लिए एक बार फिर से हमें आत्म भान को समझ कर उसे आचरण में धारण करना हेागा। आत्मिक गुणों की अनुभूति द्वारा उस सनातन संस्कृति की स्थापना हो पाएगी।

अयोध्या से पधारे महामंडलेश्वर स्वामी जन्मेजय जी ने अपनी शुभकामनाएं इन शब्दों में प्रस्तुत की। आपने कहा कि विद्यालय महाविद्यालय तो अनेक हैं परंतु इस आध्यात्मिक विश्वविद्यालय द्वारा ईश्वर से मिलन मनाने की शिक्षा दी जाती है। मेरी आप सभी के लिए यही शुभकामना है कि आप सभी इस अवसर का लाभ प्राप्त करें एवं ईश्वरीय मिलन मनाने की सौभाग्य प्राप्त कर सकें।

स्वामी नारायण पंथ वरीपुर के शास्त्री निर्मल दास जी ने अपनी आध्यात्मिकता को इन शब्दों में सभी तक प्रेषित किया। आपने कहा कि मैं वीरपुर से बैकुंठ में आ गया हूँ ऐसी अनुभूति हो रही है। इस कलियुग में मैं यहाँ सतयुग का दर्शन कररहा हूँ यह मेरा और आप सभी का सौभाग्य है। यहाँ साक्षात भगवान कार्यरत हैं यह मेरी अनुभूति है। इस भगवत कार्य का सारी दुनियाँ में प्रचार प्रसार हो। यह शुभकामना है। यह संस्था अनंत अनंत शुभ कार्य करें यह मंगल कामना है।
डॉ साध्वी सुशीला जी कुरूक्षेत्र से पधारीं। आपने कहा कि हमारा आत्मिक संवाद हो जाए तो यही काफी है। यह आज जो यहाँ हो रहा है यह एक मैत्री संवाद है जो हमें उर्जावान बनाएगा। उस आध्यात्मिक उर्जा को आचरण में लाने से ही संसार श्रेष्ठ बनेगा।

वेदपति स्वामी दयानंद सरस्वती अजमेर ने अपनी शुभकामनाएं दीं । कहा कि मैं यह कामना लेकर यहाँ आया हूँ कि सभी अतिथि आत्मा एवं परमात्मा का ज्ञान समझें एवं उस अनुसार कार्य करें।

बी के रामनाथ भाई ने जो इस प्रभाग के मुख्यालय संयोजक हैं, अपने स्वागत उद्बोधन में कहा कि यह सम्मेलन आध्यात्मिकता की शक्ति को हर दिशा में फैला रहा है। आपने कार्यक्रम में पधारे हुए सभी संत महात्माओं तथा अन्य महानुभावों का हार्दिक स्वागत किया। (रपट : बी के गिरीश, ज्ञानसरोवर)